सकाश आतंकवादी भाइयों के लिए

अपने मस्तक में अपने आप को क्लीयर बिन्दू रूप में.....चमकता सितारा अति सूक्ष्म मणी के रूप देखें.....अब अपने राइट हैन्ड में अपने फरिश्ते स्वरूप को देखें..... और अब अपने इस शरीर से निकल..... अपने फरिश्ते स्वरूप में प्रवेश करें..... और अब चलें ऊपर सूक्ष्मवतन की ओर..... और अब सूक्ष्मवतन में बड़े फरिश्ते से दृष्टि लेकर..... आकाश से नीचे की ओर आयें..... .... और एक ऊँचे स्थान पर खड़े हो जाये..... और ढूंढ़े उन जिन्दादिल इंसानों को. ..... जिन्होंने आतंक की वादियों में बसेरे डाल रखें हैं.....सामने देखो एक बड़े से लश्कर को..... अब चलो थोड़ा और नजदीक..... और बड़े स्नेह से उन्हें देखें और कहें..... कि तुम्हारे धर्म प्रेम और विश्वाश को..... मैं सलाम करता हूँ..... ऐसी बहादुरी तो आज तक हमने कहीं भी नहीं देखी..... तुम तूफानों से लड़ने एवं आग में कूदने से भी नहीं डरते..... तुम्हारी हिम्मत का तो कोई जवाब नहीं.....उर्जा तो तुम्हारे रगों में बह रही है.....तुम्हारे मर मिटने का जज्बा काबिले तारीफ है.....हमें पता है कि तुम भी आवाम में..... शान्ति ही चाहते हो.....शान्ति तो हम भी चाहते हैं.....लेकिन मेरे भाई तुम्हारा रास्ता अलग है.....तुम पथ भ्रमित हो गये हो.....तुम्हारा ये तरीका सही नहीं है..... भय से कभी भी..... प्रेम नहीं पैदा किया जा सकता.....किसी भी धर्म स्थापक ने..... हिंसा से किसी को अपना नहीं बनाया.....तुम भी उनके प्रेम से धर्म का पाठ पढ़ाओ.....सभी पढ़ लेंगें.....जिसके मन में क्रोध के अंगारे धधक रहे हों .....वह शान्ति की भावना नहीं पैदा कर सकता.....आतंक आनन्द का मार्ग नहीं है.....अपनी हिम्मत को नेकनीयती में बदल दो..... अपनी बहादुरी को बुजदिलों के दिलों में जज्बा पैदा करने में लगाओ..... अमन की चैन में खुशी से अपनी..... जीवटता और जिन्दादिली दिखाओ..... मेरे भाई तुम्हारी मर मिटने की राह..... सब कुछ व सबको बस मिटाती जा रही है.....यह विनाश का मार्ग है.....यह

हिंसा की आग सब कुछ भस्म कर रही है.....देखो सामने तुमने जिनको मारा ... .तुम्हारे अपनों को कोई और मार रहा है.....यह समस्या का अन्तहीन समाधान है..... अब उठो .....और छोड़ो इन दर्द बाँटने वाले हथियारों को.....और बढ़ाओ अपने हाथ..... दर्द व भय के साये में रहने वालों के लिए.....थाम लो उन्हें जो मौत के गर्त में गिरने वाले हैं.....मेरे भाई उठा लो उन्हें..... जो अन्तहीन निराशा के गहरे अंधकार में चले गये हैं.....और अब उन्हें पवित्रता और प्रेम की शक्ति ट्रॉंसफर करें.....उनके सिर पर बड़े प्यार से हाथ रखें..... और शान्ति एवं रहम के साथ..... क्षमाभाव की शक्ति प्रवाहित करें..... और फील करें उनके भाव को..... वो कह रहे हैं..... इतने प्यार से तो आज तक..... ये मार्ग किसी ने दिखाया ही नहीं.....बड़ी ही कृतज्ञता के साथ संकल्प कर रहे हैं..... कि अब मैं वो करूँगा जो दिलों में प्रेम का दीप जला दे.....इंसानियत को रोशन करे..... ...और अब वापस अपने स्थान पर आयें.....अब फरिश्ते स्वरूप से निकल अपने इस शरीर में प्रवेश करें.....और ये संकल्प करें कि ये कार्य..... मुझे रोज अपनी दिनचर्या में शामिल करना है.....तब तक मुझे आराम नहीं लेना है ....जब तक कहीं एक के मन भी..... नफरत का बीज बाकी है.....ओम शान्ति ।